संघनित पाठ्यपुस्तक

हिंदी

कक्षा स्तर : 3

आयु वर्ग अनुसार प्रवेशित विद्यार्थियों हेतु

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रथम संस्करण

पेपर उपयोग :

प्रकाशक :

मुद्रक:

मूल्य :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोग:
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

आमुख

राज्य में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम अप्रेल 2010 से लागू हो चुका है। उक्त अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराना राज्य सरकार का दायित्व है तथा शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को कक्षा के अनुरूप सीखने के समान स्तर पर लाने हेतु विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था कराना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु इन संघनित पाठ्यपुस्तकों को तैयार किया है। इन पुस्तकों को तैयार करते समय पिछली कक्षाओं के पाठ्यक्रम तथा दक्षताओं का ध्यान रखा गया है।

5 से 6 साल की उम्र होने पर बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करना आरम्भ करते हैं। वर्षों से स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम आयु और कक्षाओं की निश्चित संगति के अनुसार बनाए जाते रहे हैं। शिक्षा के अधिकार अधिनियम के संदर्भ में हमारे स्कूलों में ऐसे बच्चे प्रवेश ले रहे हैं जो स्कूली शिक्षा प्रारम्भ करने की सामान्य आयु से 2 से 7 वर्ष तक बड़ी आयु के हो सकते हैं। इन बच्चों को आयु के अनुसार सीधे ही आयु अनुरूप कक्षा में नामांकित किया जाएगा। इन बालकों का भाषाई कौशल व व्यावहारिक ज्ञान आरंभिक कक्षाओं के सामान्य बच्चों से उच्चतर होता है। इसी धारणा को ध्यान रखते हुए इन बच्चों के लिए विभिन्न विषयों की पाठ्यसामग्री तैयार की गई। अपेक्षा यह है कि बच्चे एक पुस्तक में सम्मिलित अवधारणाओं–कौशलों को अपनी आयु एवं स्तर के अनुसार 3 से 6 माह की अवधि में अर्जित कर सकेंगे। इससे उनकी सीखने की गति भी बढ़ेगी।

प्रस्तुत पुस्तक को सर्वांग परिपूर्ण बनाने का पूरा–पूरा प्रयास किया गया है। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.), उदयपुर इस पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राजस्थान पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, लेखकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों के संपादकों, प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है। हमारे पर्याप्त प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्थान आदि का नाम छूट गया हो तो हम उनके भी आभारी हैं।

पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता की अभिवृद्धि के लिए श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव स्कूल शिक्षा, डॉ जोगाराम, आयुक्त राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद्, जयपुर, निदेशक

प्रारंभिक एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान सरकार का मार्गदर्शन संस्थान को सतत प्राप्त होता रहा है। एतदर्थ संस्थान आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से हुआ है जिसके लिए संस्थान आभारी है।

मुझे आशा है कि राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर द्वारा तैयार कराई पाठ्यसामग्री शिक्षा से वंचित वर्ग के बालक–बालिकाओं में कक्षानुसार दक्षता विकसित करने में तथा उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ने में उपयोगी सिद्ध होगी।

निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक : रूक्मणि रियार, निदेशक, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

सह संरक्षक : सुभाष शर्मा, विभागाध्यक्ष, शिक्षाक्रम एवं मूल्यांकन विभाग

मुख्य समन्वयक : वनिता वागरेचा, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

समन्वयक : सत्यवती आचार्य, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

सह समन्वयक : डॉ. विमलेश कुमार पारीक, अध्यापक, रा.मा.वि., ढींढा, दूदू, जयपुर

लेखकगण : डॉ. सुजाता शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.बा.उ.मा.वि., खंडार, सवाईमाधोपुर

डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत, प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि., ड्योढ़ी, जयपुर

अंजलि कोठारी, व्याख्याता, डाइट, उदयपुर

सीताराम शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., लूलवा, मसूदा, अजमेर

डॉ. मूलचंद बोहरा, उपनिदेशक, आर.टी.ई., प्रा.शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., लूणकरनसर, बीकानेर

यशोदा दशोरा, ए.बी.ई.ओ, कार्यालय जि.शि.अ., प्रा.शि., उदयपुर

बनवारी लाल शर्मा, प्र.अ., रा.उ.प्रा.वि., यादव खेड़ा, जालसू, जयपुर

डॉ. कृष्णकांत चौहान, अध्यापक, रा.उ.मा.वि., लकापा, सलूम्बर, उदयपुर

तोषी सुखवाल, अध्यापक, के.जी.बी.वी., मावली, उदयपुर

आवरण एवं सज्जा : डॉ. जगदीश कुमावत, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

राजाराम व्यास, व्याख्याता (संविदा), एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

चित्रांकन : योगेश अमाना, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि, उपली ओड़न, नाथद्वारा

तकनीकी सहयोग : हेमन्त आमेटा, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : सीमा प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, उदयपुर

शिक्षकों से...

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण प्रक्रियाओं में विद्यार्थी केन्द्र के रूप में है तथा प्रत्येक बालक महत्वपूर्ण है। उक्त अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध करवाना राज्य सरकार का दायित्व है; साथ ही वंचित बालक–बालिकाओं को समान स्तर पर लाने हेतु विशेष प्रयास करना आवश्यक है।

इसी विशेष प्रयास की कड़ी में शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु संघनित पाठ्यसामग्री तैयार की गई है।

आमतौर पर बच्चे 5–6 वर्ष की आयु में औपचारिक शिक्षा प्रारंभ करते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं, लेकिन अधिनियम की धारा 25 के तहत विद्यालयों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी आयु के अनुसार सीधे ही बड़ी कक्षाओं में प्रवेश पा रहे हैं। बड़ी उम्र होने के कारण इन बच्चों की मानसिक योग्यता, भाषाई कौशल, व्यावहारिक ज्ञान आदि आरंभिक कक्षाओं के सामान्य बच्चों से उच्चतर है। फिर भी पढ़ना–लिखना सीखने के लिए पठन–लेखन की दक्षताओं के माध्यम से विषय के अध्ययन हेतु कौशल अर्जित करने के लिए उन्हें एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम पर कार्य करने की आवश्यकता है। उनकी उच्चतर भाषायी क्षमता और परिवेशीय अनुभव के आधार पर यह कार्य अधिक सारपूर्ण एवं त्वरित गति से सम्पन्न किया जा सकता है। इन्हीं संभावनाओं व धारणाओं को ध्यान रख कर हिन्दी भाषा की पुस्तकें विशेष पाठ्यसामग्री के रूप में तैयार की गई है।

पुस्तकों का विभाजन संघनित पाठ्यपुस्तक कक्षा स्तर 1 व 2, कक्षा स्तर 3, कक्षा स्तर 3 से 4, कक्षा स्तर 3 से 5, कक्षा स्तर 3 से 6, कक्षा स्तर 3 से 7 के अनुरूप किया गया है। जिनका शिक्षक बच्चे की आधाररेखा आकलन करने पर प्राप्त स्तर के अनुरूप शिक्षण के दौरान उपयोग कर सकेंगे। उक्त पुस्तकों में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित कक्षावार पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य एवं गतिविधियों को सम्मिलित व व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति व स्तर भिन्न–भिन्न होते हैं लेकिन यह अपेक्षा की गई है कि प्रत्येक पुस्तक में सम्मिलित अवधारणाओं–कौशलों को 3 से 6 माह में अर्जित कर सकेंगे।

इन पुस्तकों की विषयवस्तु एवं प्रसंग बच्चों के सामान्य परिवेश से लिए गए हैं। प्राकृतिक परिघटनाएँ, पशु–पक्षी, सामाजिक चेतना, साँस्कृतिक गौरव, मूल्यों का विकास, स्वास्थ्य, देश–प्रेम, संवेदनशीलता आदि को सम्मलित किया गया है। विविधताओं को समेटने हेतु विषयगत एवं विधागत दोनों रूपों के समावेश का प्रयास है। साथ ही साथ जीवंत चित्रों के माध्यम से समस्त पाठ्यसामग्री को सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास भी किया गया है।

चूँकि ये बच्चे बोली में भाषाई समझ व कौशलों से संपन्न होते हैं; लेकिन हिंदी की मानक शब्दावली, उनके वर्ण–ध्वनियों के सटीक उच्चारण व वाक्य संरचनाओं के लिखित रूप से अपरिचित होते हैं। अतः पुस्तकों में पाठों की संख्या सीमित रखी गई है और उक्त कौशलों के संवर्धन हेतु लेखन–पठन की क्षमता वाली गतिविधियों का समावेश अधिक किया गया है।

पुस्तकों पर काम करने के दौरान बच्चों का मूल्यांकन सतत् एवं व्यापक होगा। इसके लिए राज्य में प्रचलित मूल्यांकन के दस्तावेजों को संधारित किया जाना अपेक्षित है। इसके माध्यम से शिक्षक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे के सीखने की स्थिति, प्रगति एवं आवश्यकताओं का समुचित आकलन कर योजना तैयार करते हुए कार्य कर पाएँगे।

इस पाठ्यसामग्री को उक्त बच्चों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल की तरह विकसित किया गया है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में विभिन्न स्तर के बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं, इस हेतु भी यह पाठ्यसामग्री उसके कार्य को सहज एवं व्यवस्थित करने में मदद करेंगी।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ सं0
1	देशं की माटी	कविता	1–3
2	मीठे बोल	कहानी	4–7
	केवल पढ़ने के लिए (एकता में बल)	कविता	8
3	ओ मेरी छतरी ठहर जरा	संवाद	9–12
4	बुलबुल	लघु निबंध	13–15
5	मन करता है	कविता	16–18
	केवल पढ़ने के लिए (बूझो तो जानें–पहेली)	कविता	19
6	अजमेर की यात्रा	यात्रा वृतांत	20–25
7	आजादी के दीवाने	कविता	26–28
8	साहसी बालिका	कहानी	29–32
	केवल पढ़ने के लिए (वर्ग पहेली)	लोककथा	33
9	कागा, मूषक टोपी ले ली	कहानी	34–40

1 देश की माटी

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल ।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

देश के घर और देश के घाट।
देश के वन और देश के बाट।
सरल बनें प्रभु, सरल बनें।।

देश के तन और देश के मन।
देश के घर के भाई–बहन।
विमल बनें प्रभु, विमल बनें।।

देश की इच्छा, देश की आशा।
देश की शक्ति, देश की भाषा।
एक बनें प्रभु, एक बनें।।

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

निर्देश–भारत देश की विशेषताओं पर चर्चा करें। कविता को सस्वर गाएँ और गवाएँ।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

सरस	–	रसवाला, मोहक, अच्छा
घाट	–	तट के आस–पास का सीढ़ीदार स्थान
बाट	–	रास्ता
विमल	–	निर्मल, स्वच्छ

उच्चारण के लिए

प्रभु, देश, भाई–बहन, इच्छा

सोचें और बताएँ

1. सरस बनने के लिए किससे निवेदन किया गया है ?
2. देश के तन और मन को क्या बनने के लिए कहा गया है ?
3. वन और बाट कैसे होने चाहिए ?

लिखें

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(भाई–बहन, सरस, इच्छा, फल)

(क) हवा देश की देश के ..... ।

(ख) सरस बनें प्रभु ..... बनें।

(ग) देश के घर के ..... ।

(घ) देश की ....., देश की आशा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. देश की माटी व जल कैसे होने चाहिए ?
2. किस–किस को विमल बनने के लिए कहा गया है ?
3. देश की भाषा और देश की शक्ति के लिए क्या कहा गया है ?

भाषा की बात

- नीचे कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थ वाले शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें रेखा खींचकर मिलाएँ–

आशा	अनिच्छा
इच्छा	निराशा
शक्तिशाली	विदेश
देश	नीरस
सरस	कमजोर

- नीचे लिखे शब्दों से खाली जगह भरकर कहानी बनाइए तथा पढ़िए–

कौआ, कम पानी, घड़ा, प्यासा, ऊपर आया, प्यास बुझ गई, कंकड़, पानी पीया

एक ..... था। वह ..... था। उसने .....
देखा। घड़े में ..... था। उसने ..... डाले। पानी .....।
कौए ने .....। उसकी .....।

यह भी करें

- इस कविता को हाव–भाव के साथ अपनी कक्षा में सुनाइए।
- चित्र पूरा कर रंग भरिए–

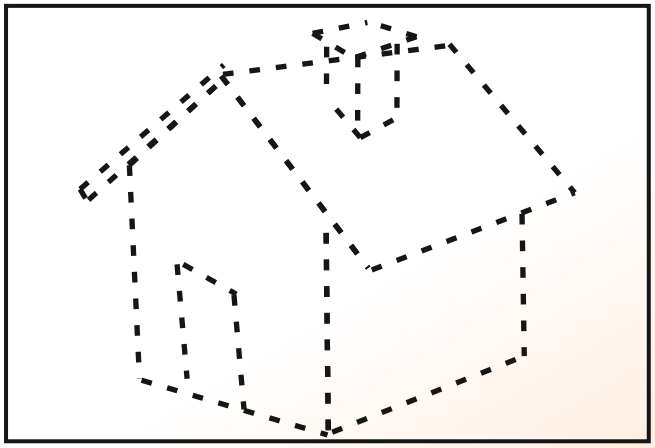

हँसिए– पिता पुत्र से – आज तुम स्कूल क्यों नहीं गए?
पुत्र – कल स्कूल में हमें तोला गया था, आज कहीं बेच न दें; यह सोचकर मैं स्कूल नहीं गया।

2 मीठे बोल

एक खरगोश था। वह घूमता हुआ बाज़ार में पहुँचा। उसकी नज़र गुड़ की भेलियों पर पड़ी। वह सोचने लगा, ''कितना अच्छा हो मुझे थोड़ा गुड़ खाने को मिल जाए, पर कैसे ? चुरा लूँ। नहीं, नहीं। चोरी करना बुरी बात है क्यों नहीं दुकानदार से माँग लूँ ? वह जरूर गुड़ दे देगा।'' वह दुकानदार के पास गया और बोला, ''आप दयालु हैं। दानी हैं। जीवों पर दया करते हैं। आपका कारोबार बढ़े। क्या आप मुझे थोड़ा गुड़ देंगे ?''

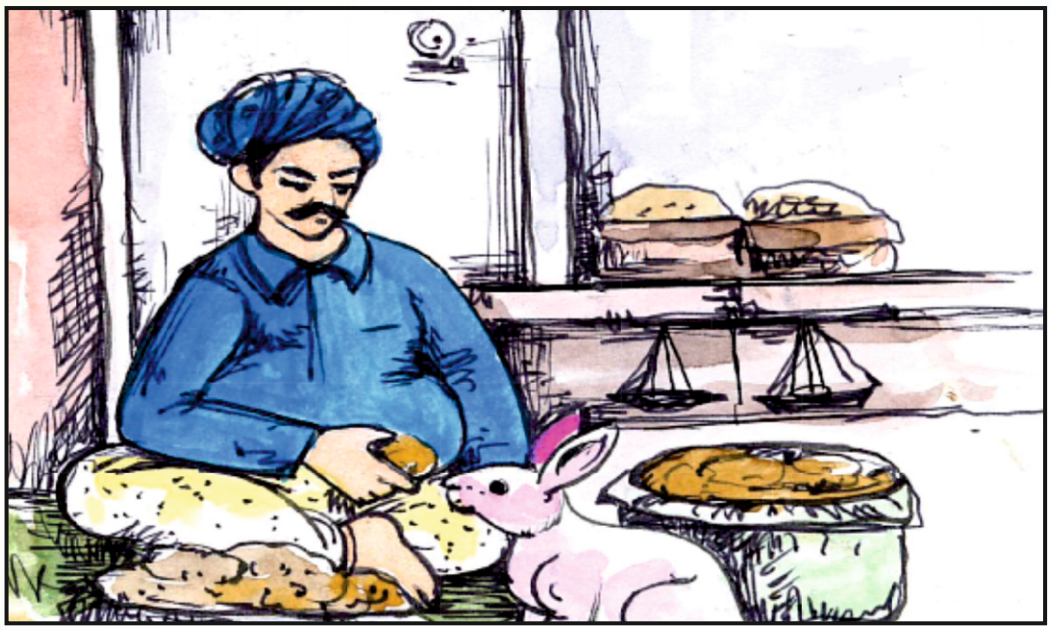

खरगोश की बात सुनकर दुकानदार खुश हो गया। उसने उसे गुड़ दे दिया। खरगोश खुशी से उछलता हुआ जंगल की तरफ भागा। वह पेड़ के नीचे बैठकर गुड़ खाने लगा।

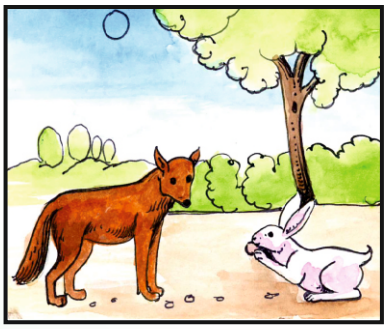

इतने में एक लोमड़ी वहाँ आई। उसको देखकर खरगोश ने गुड़ छिपा लिया। लोमड़ी बहुत चालाक थी। उसने गुड़ को देख लिया था। वह बोली, ''तुम गुड़ कहाँ से लाए ? बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगी।''

खरगोश ने कहा, ''मुझे मत मारो। मैं बताता हूँ। बाजार में एक दुकान पर खूब सारा गुड़ रखा है। तुम वहाँ जाना। दुकानदार से माँग लेना। वह तुम्हें भी गुड़ दे देगा।''

लोमड़ी बोली ,"अब चुप रहो मुझे ज्यादा मत समझाओ ।"

लोमड़ी बाजार की तरफ चल दी। उसने गुड़ का ढेर देखा। गुड़ देखकर सोचने लगी। खरगोश तो मूर्ख है। थोड़ा सा गुड़ लेकर वह खुश हो गया लेकिन मैं उसकी तरह निर्बल नहीं हूँ। दुकानदार को धमकाकर ही बहुत सारा गुड़ ले लूँगी।

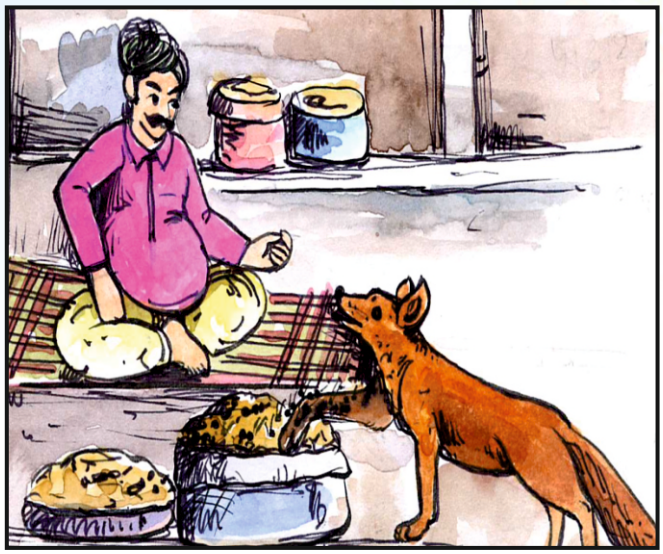

वह दुकानदार के पास गई और अकड़कर बोली, ''दुकानदार, तुम बेईमान हो, सामान कम तोलते हो, मिलावट करते हो। मुझे गुड़ की भेली दो, नहीं तो मैं तुम्हारी शिकायत करूँगी।''

दुकानदार सोचने लगा, यह लोमड़ी धूर्त है, मुझे धमकी दे रही है। डरा कर गुड़ माँगती है। अभी मजा चखाता हूँ। वह बोला, ''बैठो, बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ।'' लोमड़ी खुश हो गई।

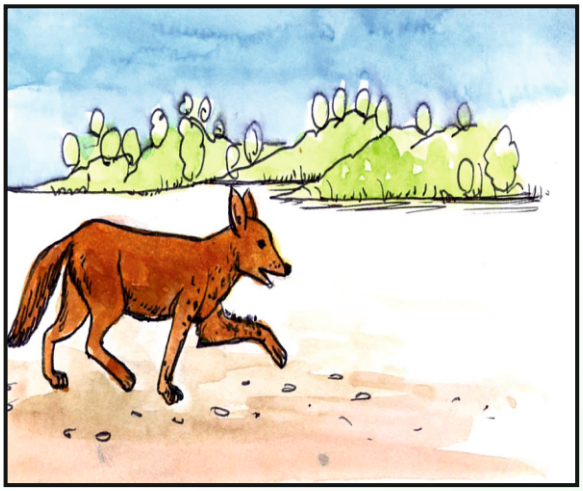

दुकानदार अंदर गया। उसने गुड़ का बोरा देखा, जिसमें बहुत सारे चींटे थे। वह उसे उठा लाया और लोमड़ी से बोला, ''लो, इसमें से चाहे जितना गुड़ ले लो।''

लोमड़ी ने झट से बोरे में पंजा डाला। पंजा डालते ही चींटे उसके पंजे पर चिपक गए और काटने लगे। उसने झट से अपना पंजा खींचा और जोर– जोर से जमीन पर पटकने लगी। पटकने से पंजे पर चोट लग रही थी। दर्द भी होने लगा, पर चींटे नहीं छूटे।

वह जंगल की ओर भागते हुए चिल्लाई, ''नहीं चाहिए तेरा गुड़। तेरा गुड़ तो खारा है।

मीठे बोल, होते अनमोल

निर्देश – बालकों को पात्र बनाकर इस कहानी का अभिनय कराएँ।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

दयालु	–	दया करने वाला
दानी	–	दान करने वाला
कारोबार	–	कार्य, व्यापार
निर्बल	–	कमजोर
धूर्त	–	चालाक
अकड़ना	–	घमंड करना

उच्चारण के लिए

निर्बल, धूर्त, दर्द, अकड़कर, अंदर, चींटे, मूर्ख, शिकायत

सोचें और बताएँ

1. खरगोश को गुड़ खाते हुए किसने देखा ?
2. लोमड़ी बाजार की तरफ क्यों गई ?
3. दुकानदार ने लोमड़ी के बारे में क्या सोचा ?

लिखें

नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

(जंगल, धूर्त, निर्बल, मूर्ख)

(क) मैं उसकी तरह ..... नहीं हूँ।

(ख) यह लोमड़ी ..... है।

(ग) वह .....की ओर भागते हुए चिल्लाई।

(घ) खरगोश तो ..... है।

किसने कहा, लिखिए–

(क) आप बहुत दयालु हैं। .....

(ख) मैं निर्बल नहीं हूँ। .....

(ग) बैठो–बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ। .....

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. खरगोश ने गुड़ की भेलियों को देखकर क्या सोचा ?
2. लोमड़ी की बातें सुनकर दुकानदार ने क्या किया ?

भाषा की बात

- पाठ में धूर्त, मूर्ख आदि शब्द आए हैं; ऐसे शब्दों पर 'र' वर्ण का हलन्त रूप 'र्' आगे वाले वर्ण पर रूप बदल कर लिखा जाता है। आप भी ऐसे शब्द लिखिए–

  जैसे–द + र् + द = दर्द

  ....

- नीचे दिए खानों में कुछ जानवरों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखिए–

कु	भैं	त्ता	स
बि	या	ल्ली	क
गा	बै	य	ल
ब	स	क	री

....

....

....

....

यह भी करें

- कहानी याद करें और कक्षा में सुनाएँ।
- लोमड़ी के स्थान पर आप होते तो क्या करते ? लिखिए।

हँसिए

मोहन – बता मेरी जेब में कितने सिक्के हैं?

सोहन – अगर मैंने सही बता दिया तो एक सिक्का मुझे दोगे?

मोहन – अरे, बता तो सही, मैं दोनों ही दे दूँगा।

पढ़ने के लिए

एकता में बल

एक थी चींटी। बाहर घूमने निकली। रास्ते में उसे रोटी का टुकड़ा दिखाई दिया। उसने उसे लुढ़काकर ले जाने की कोशिश की। वह टुकड़े को नहीं ले जा सकी। उसने सोचा– रोटी का टुकड़ा भारी है; दल की और चींटियों को बुला लूँ। उसने जैसा सोचा, वैसा ही किया। सभी चींटियाँ मिलकर टुकड़े को बिल में ले गईं।

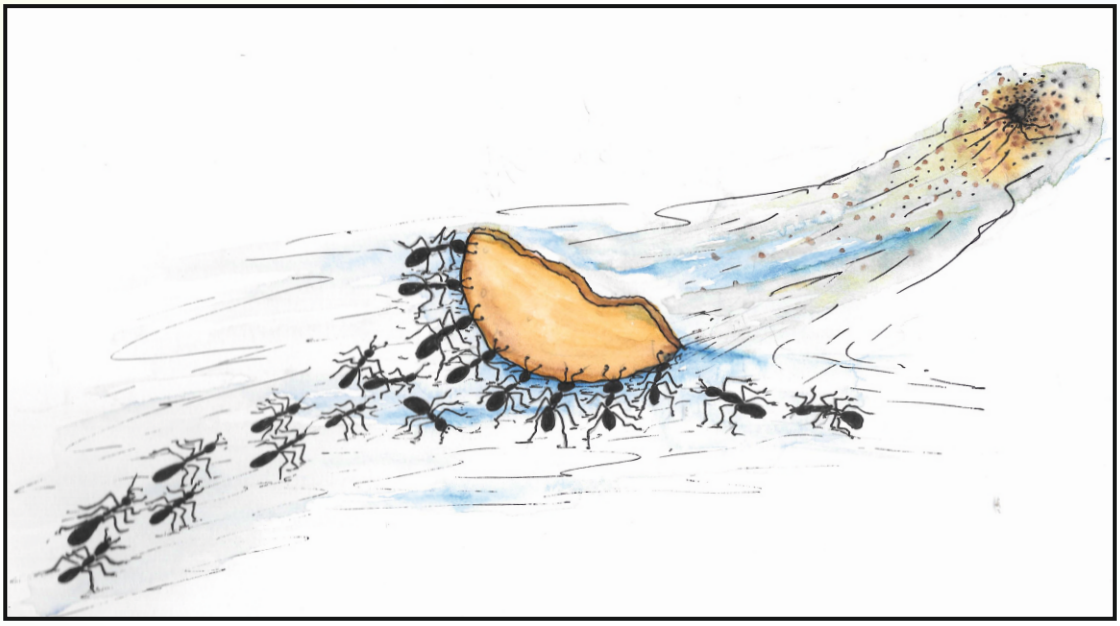

संगठन में शक्ति है।

3 ओ मेरी छतरी ठहर ज़रा!

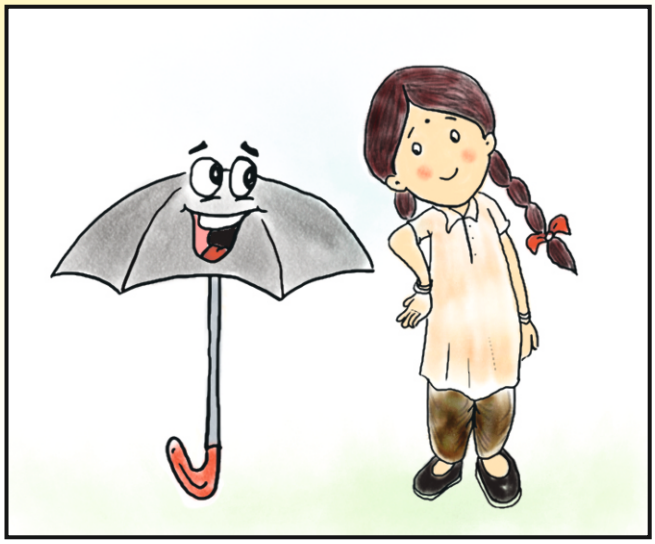

चुनमुन ने देखा बाहर ठंडी हवा चल रही है। रिमझिम–रिमझिम पानी भी बरस रहा है। उसने मन में सोचा; चलो बाहर घूमा जाए। अपनी काली छतरी को आवाज लगायी – ओ मेरी छतरी तू आ जा। छतरी तुरंत आ गयी – चुनमुन उसे लेकर घूमने निकल पड़ी।

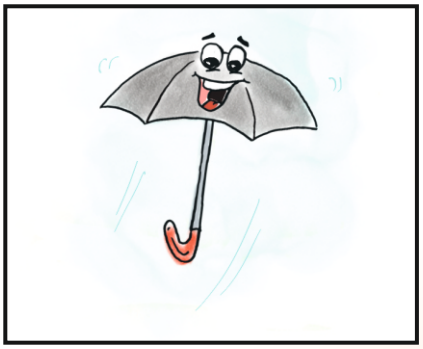

एक जोरदार हवा का झोंका आया और छतरी तो उड़ चली हवा में। चुनमुन बोली, ओ, मेरी छतरी ठहर ज़रा। लेकिन छतरी तो आकाश में ऊपर उड़ती चली गई।

तभी एक कौआ कहीं से उड़ता चला आ रहा था; वह छतरी के पीछे–पीछे उड़ने लगा। सोचने लगा – अरे, वाह!

कितना अच्छा घर मिल गया। उड़ते – उड़ते वह जैसे ही छतरी के पास पहुँचा; उसने झट से छतरी को अपने पंजों में दबा लिया और उड़ने लगा। कौआ उड़ते–उड़ते एक पेड़ के पास पहुँच गया। कौए ने छतरी को पेड़ की टहनी पर उल्टा लटका दिया और अपना घोंसला बना दिया। उसकी पत्नी ने उसमें अपने बच्चों को बैठा दिया।

पूरा परिवार उस छतरी के घोंसले में आराम से रहने लगा। अब छतरी यह सोचने लगी कि मैंने चुनमुन का कहना मान लिया होता तो आज मैं बड़े मजे से घर के अंदर रहती।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

रिमझिम	–	हल्की फुहार
पंजा	–	पक्षी का पैर
टहनी	–	डाली
घोंसला	–	पक्षी का घर

उच्चारण के लिए

रिमझिम, झोंका, परिवार, बच्चों

सोचें और बताएँ

1. चुनमुन क्या लेकर घूमने निकली?
2. छतरी में किसका परिवार रहने लगा?

लिखें

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. जोरदार हवा का ..... आया।
2. कौए ने ..... को पेड़ की टहनी पर ..... लटका दिया।
3. पूरा परिवार उस छतरी के ..... में आराम से रहने लगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. उस दिन मौसम कैसा था?
2. अगर छतरी चुनमुन की बात मान लेती तो क्या होता?
3. कौए ने छतरी को देखकर क्या सोचा?

भाषा की बात

- नीचे लिखे शब्दों के वर्णों को अलग–अलग कीजिए –

छतरी	–	छ् + अ + त् + अ + र् + ई
जन्य	–	ज् + अ + न् + य् + अ
कल्पना	–	....
कौआ	–	....
हवा	–	....

- 'अ' लगाकर नए शब्द बनाइए–

स्वच्छ	–	अस्वच्छ
शिक्षित	–	.....
धर्म	–	.....
भाव	–	.....
नाथ	–	.....
प्रसन्न	–	.....
शिक्षा	–	.....

- निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए–

शब्द		वाक्य
सोना	–	मैं खाट पर सोता हूँ।
पढ़ना	–	.....
लिखना	–	.....
बनाना	–	.....
उड़ना	–	.....
खेलना	–	.....

क्रिया विधि–बारहखड़ी की बात

आपने यह कहानी पढ़ी। कैसी लगी ? कहानी में एक वाक्य आया है – 'ओ, मेरी छतरी तू आ जा।' इसमें 'ओ' वर्ण को बोलिए और ध्यान से सुनिए। अब कुछ अन्य वर्णों को ध्यान से

बोलिए – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, औ। ये ध्वनियाँ कैसी सुनाई देती हैं? अकेली–अकेली–सी अथवा दो आवाजों से मिलकर बनी हुई–सी।

अब एक नया वाक्य लीजिए– 'चुनमुन ने देखा बाहर ठंडी हवा चल रही है'। इस वाक्य से कुछ वर्णों को बोलिए और ध्यान से सुनिए– न, ब, र, ठ, च, ल।

ये आवाजें बोलने पर कैसे लगती हैं? अकेली–अकेली–सी अथवा इन सबके साथ बाद में 'अ' की आवाज मिली हुई सुनाई देती है? अब आप समझ गए होंगे कि अ, आ, इ, ई, ऋ, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ अकेली सुनाई देने वाली आवाजें हैं। इनको स्वर वर्ण कहा जाता है।

क, ख, ग ..... से श, ष, स, ह मिली हुई आवाजें हैं। इन सबके साथ 'अ' की आवाज जुड़ी हुई है। इनको व्यंजन वर्ण कहते हैं।

यानि, व्यंजन–ध्वनि अकेली नहीं बोली जाती है। वह स्वर ध्वनि के साथ ही बोली जा सकती है। उदाहरण देखिए –

क	(अ के साथ)	का	(आ के साथ)
कि	(इ के साथ)	की	(ई के साथ)
कु	(उ के साथ)	कू	(ऊ के साथ)
के	(ए के साथ)	कै	(ऐ के साथ)
को	(ओ के साथ)	कौ	(औ के साथ)

यह भी करें

- आइए खेलें अंत्याक्षरी

  अब तक आपने बहुत सारे शब्द सीख लिए होंगे। आइए, शब्दों की अंत्याक्षरी खेलें। देखें आप कितने शब्द बना पाते हैं–

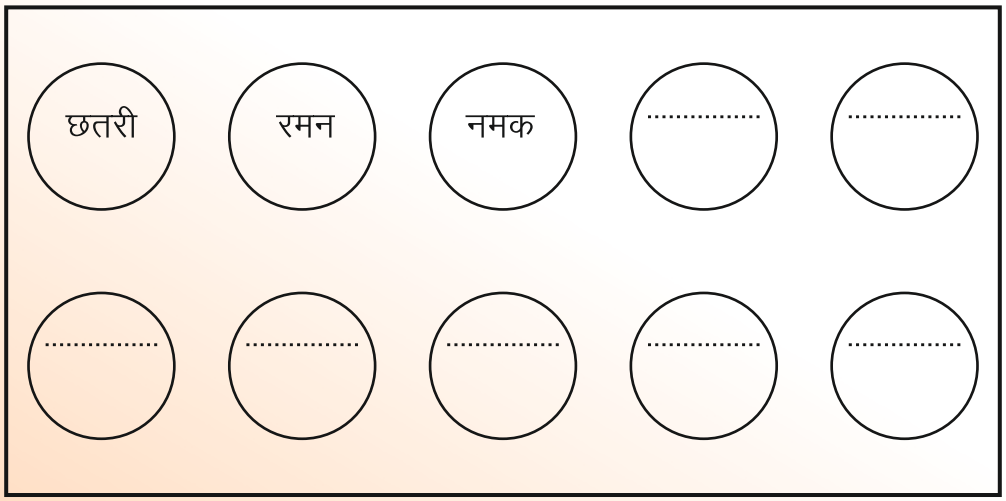

4 बुलबुल

क्या आपने कभी बुलबुल देखी है? बुलबुल को पहचानने का एक सरल तरीका है। यदि आपको कोई चिड़िया तेज आवाज में बोलती हुई मिले तो उसकी पूँछ को देखिए। यदि पूँछ के नीचे वाली जगह लाल हो तो समझिए वह चिड़िया बुलबुल है।

बुलबुल की पूँछ के सिरे का रंग सफेद होता है। उसका बाकी शरीर भूरा और सिर का रंग काला होता है।

बुलबुल ऊँची आवाज़ में बोलती है। जिसके सिर पर काले रंग की कलगी हो, उसे सिपाही बुलबुल कहते हैं।

बुलबुल पीपल या बरगद के पेड़ पर कीड़े ढूँढ़कर खाती है।

वह अपना घोंसला सूखी हुई घास और छोटे पौधों की पतली जड़ों से बुनती है। घोंसला अंदर से एक सुंदर कटोरे जैसा दिखता है। बुलबुल एक बार में दो या तीन अंडे देती है। उसके अंडे हल्के गुलाबी रंग के होते हैं।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

तरीका – ढंग

कलगी – टोपी, पक्षियों के सिर पर निकला हुआ बालों का गुच्छा, चोटी

बरगद – बड़ का पेड़, वट–वृक्ष

घोंसला – पक्षियों का घर

उच्चारण के लिए

पूँछ, हल्के, ढूँढ़कर, सुन्दर

सोचें और बताएँ

1. बुलबुल की पूँछ के सिरे का रंग कैसा होता है?
2. बुलबुल का घोंसला अंदर से कैसा दिखता है?
3. बुलबुल एक बार में कितने अंडे देती है ?

लिखें

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखए–

1. आप बुलबुल को कैसे पहचानेंगे?
2. सिपाही बुलबुल किसे कहते है?
3. बुलबुल अपना घोंसला किन–किन चीजों से बनाती है?

भाषा की बात

- पाठ में से अनुस्वार व अनुनासिक शब्द छाँटकर लिखिए–

अनुस्वार (ं)	अनुनासिक (ँ)

- पढ़िए, समझिए और लिखिए–

पेड़–पौधे	=	पेड़ और पौधे
दौड़ना–भागना	=	.....
जीव–जंतु	=	.....
फूल–पत्ते	=	.....
घूमना–फिरना	=	.....

यह भी करें

- लिखिए मैं कौन हूँ–

मैं उड़ता हूँ।
मैं नाचता भी हूँ। > .....

मैं गरजता हूँ।
मैं बरसता भी हूँ। > .....

मैं काला हूँ।
मैं काँव–काँव भी करता हूँ। > .....

- चित्र में रंग भरिए

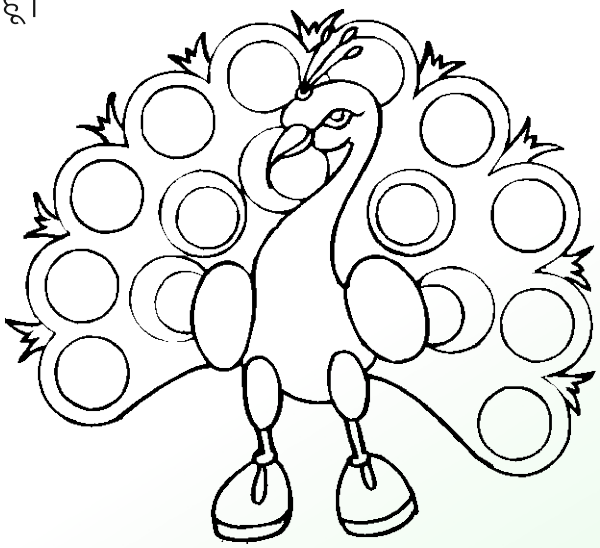

हँसिए

एक दुकानदार ने नई दुकान खोली। उसने अपने नौकर से कहा कि दुकान के बाहर यह सूचना लिखवा दो,'रविवार को भंडार बंद रखा जाएगा।' अगले दिन जब दुकानदार आया तो उसने देखा, कुछ लोग वहाँ खड़े होकर सूचना को पढ़कर हँस रहे थे। दुकानदार ने आगे बढ़कर देखा। सूचना इस प्रकार लिखी गई थी– 'रविवार को भंडार बंदर खा जाएगा।'

5 मन करता है

मन करता है सूरज बनकर
आसमान में दौड़ लगाऊँ।
मन करता है चंदा बनकर
सब तारों पर अकड़ दिखाऊँ।

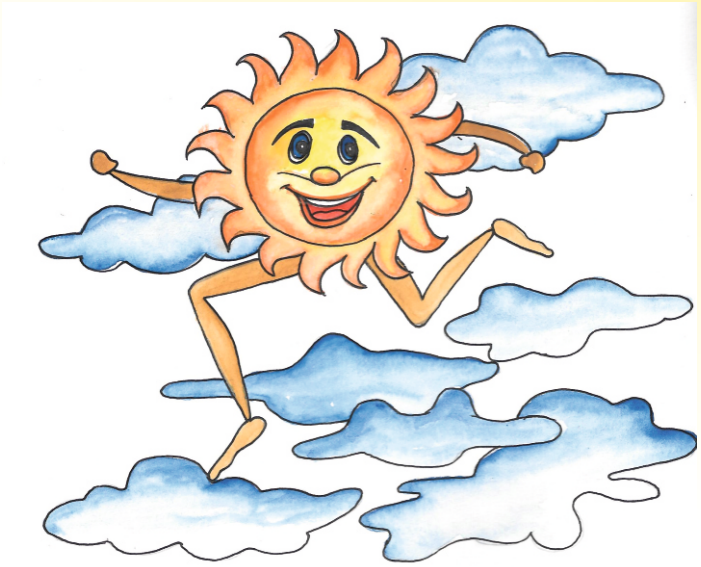

मन करता है बाबा बनकर
मैं सब पर धौंस जमाऊँ।
मन करता है पापा बनकर
मैं भी अपनी मूँछ बढ़ाऊँ।

मन करता है तितली बनकर
दूर–दूर उड़ता जाऊँ।
मन करता है कोयल बनकर
मीठे–मीठे बोल सुनाऊँ।

मन करता है चिड़िया बनकर
चीं–चीं चूँ–चूँ शोर मचाऊँ।
मन करता है चर्खी लेकर
पीली लाल पतंग उड़ाऊँ।

अभ्यास कार्य

उच्चारण के लिए

धौंस, मूँछ, अकड़, चर्खी

सोचें और बताएँ

1. तितली बनकर क्या करने का मन करता है?
2. कोयल कैसे बोल सुनाती है?

लिखें

नीचे दिए गए शब्दों से रिक्तस्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मन करता है ..... बनकर (सूरज / तारे)
   आसमान में ..... लगाऊँ। (दौड़ / शोर)
2. मन करता है ..... लेकर (चम्मच / चर्खी)
   पीली लाल ..... उड़ाऊँ। (तितली / पतंग)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. मीठे बोल कौन सुनाता है?
2. सब पर धौंस कौन जमाता है?
3. चर्खी लेकर क्या करने का मन करता है?

भाषा की बात

- कविता में सूरज, चन्दा, बाबा, मूँछ, चर्खी, चिड़िया आदि शब्द आए हैं। ये शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु आदि के नाम का बोध करवाते हैं। ऐसे शब्दों को 'संज्ञा' शब्द कहा जाता है। आप भी ऐसे शब्दों को नीचे लिखे गद्यांश में से छाँटकर लिखिए–

  रवि सबकी आँखों का तारा है। आखिर ऐसा क्या है रवि में कि सब लोग उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते?वह हमेशा कचरा–पात्र में ही कचरा डालता है। रवि स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत का समर्थक है।

- कविता में दौड़ना, सुनना, अकड़ना आदि क्रिया शब्द आए हैं।

आप भी इन क्रिया शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

जैसे – दौड़ना– राम ने गुरु जी को देखकर दौड़ लगाई।

सुनना – ..... ।

अकड़ना – ..... ।

दिखाना – ..... ।

बढ़ाना – ..... ।

उड़ना – ..... ।

यह भी करें

1. कौन किस पर अकड़ जमाता है? लिखिए–

आसमान में	चंदा	तारों पर
खेल में	.....	.....
जंगल में	.....	.....
स्कूल में	.....	.....
नदी में	.....	.....

2. आपका मन क्या–क्या करने को करता है, लिखिए–

खाने में – .....

खेलने में – .....

पीने में – .....

बनाने में – .....

पहनने में – .....

3. पतंग का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए।

4. आप घर व स्कूल में कौन–कौनसे खेल खेलते हैं? उनके नाम लिखिए।

पढ़ने के लिए

बूझो तो जानें

(1)

लाठी की तुम सुनो कहानी।
उसमें छिपा है, मीठा पानी।।

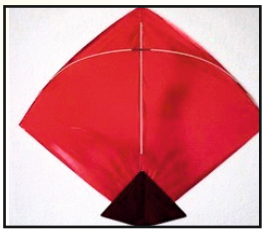

(2)

पंख नहीं मगर उड़ती हूँ।
हाथ नहीं मगर लड़ती हूँ।।

(3)

ऊपर से नीचे जाऊँ
नीचे से ऊपर आऊँ।
फेंको–पटको, ऊपर उछालो
जितना चाहो, खेल खिलाऊँ।

(4)

सीधा बोलो नीर पिलाती
उल्टा बोलो 'दीन' कहाती।

6 अजमेर की यात्रा

गुरमीत अजमेर घूमना चाहता था। उसने रज्ज़ाक को लिखा था कि वह उसी के घर ठहरेगा। उसका घर दरगाह बाज़ार में है। आज सवेरे जब गुरमीत रेलगाड़ी से उतरा, तो रज्ज़ाक उसे अपने डिब्बे के सामने ही मिल गया। उतरते ही उसने पहली बात यही कही, ''दोस्त, आज तो रेलगाड़ी में मेरा कचूमर ही निकल गया। कितनी भीड़ रहती है इस रेलगाड़ी में।''

''रमज़ान के महीने में अगर तुम यहाँ आना चाहो तो सोच–समझ कर ही आना। यों भी एकदम सींकिया पहलवान हो तुम।'' रज्ज़ाक ने हँसते हुए जवाब दिया।

''क्या उस समय और भी अधिक भीड़ हो जाती है ?''

''अरे, पूछो ही मत! उस समय अजमेर की आबादी में कम से कम एक लाख लोग और जुड़ जाते हैं। यात्रियों के लिए बहुत–सी व्यवस्थाएँ की जाती हैं। सड़कों पर, बाजारों में, जहाँ देखो वहाँ भीड़–ही–भीड़ हो जाती है।''

''तुम्हारे घर के पास तो मेला लगा रहता होगा ?''

''कुछ पूछो ही मत! उन दिनों तो बाज़ार जाकर सब्जी लाने में भी पहलवानी दिखानी पड़ती है।'' दोनों मित्र ज़ोर से हँस पड़े।

कुछ देर बाद गुरमीत को रज्ज़ाक अजमेर की यात्रा कराने ले गया।

दरगाह शरीफ

''यह देखो, यह सदर दरवाज़ा कहलाता है और वह सामने बुलंद दरवाज़ा। उसके भीतर ही दरगाह है। हम लोग वहीं चल रहे हैं।'' रज्ज़ाक ने बताया।

''और ये बड़े–बड़े कड़ाह ?'' बुलंद दरवाज़े के दाएँ–बाएँ दिखाते हुए गुरमीत ने पूछा।

''इन्हें 'देग' कहते हैं। इस बड़े देग में सौ मण से ज्यादा चावल का ज़रदा पक सकता है और छोटे में साठ मण। उर्स के समय वही प्रसाद बाँटा जाता है। उसे 'देग लूटना' कहते हैं। उस समय तो यहाँ कंधे से कंधा छिल जाता है। आओ आगे चलें।''

''यह बारहदरी और भीतर की मज़ार सब संगमरमर से जड़े हैं।

देखो ना, कितना अच्छा लगता है यह सब।'' गुरमीत ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

''हाँ, अत्यंत शांत और पवित्र। साथ ही गुलाब के फूलों की भीनी–भीनी महक भी फैल रही है।''

बाहर आकर गुरमीत ने पूछा, '' क्यों दोस्त, मज़ार पर वह चादर कैसी थी ?''

''यहाँ चादरें चढ़ाई जाती हैं; जब कोई मन्नत पूरी होती है।

अब देखो, उस पहाड़ी पर तारागढ़ है। इसके ढलान में पृथ्वीराज का स्मारक है।

पृथ्वीराज चौहान

''कौन पृथ्वीराज? जिन्होंने भारत पर आक्रमण करने वाले मोहम्मद गौरी को कई बार हराया था?''

''हाँ, वही, चौहान राजा जो भारत के सम्राट रहे। रज्ज़ाक, अब आनासागर चलें। रास्ते में ही सोनीजी की नसियाँ है और सुभाष बाग भी देख लेंगे।''

''वह गुंबदों वाला मकान है ना! वह महर्षि दयानंदजी का आश्रम है। यहीं पर उनकी समाधि है। जानते हो, दयानंद के नाम पर ही अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम रखा गया है। समाधि के चारों ओर देखो, कितना सुंदर दृश्य है।''

''बहुत ही सुहावना! इस समय आना सागर में पानी भी काफी है। दूसरी पाल पर बच्चों के खेलने और झूलने के बहुत से साधन हैं और हाँ, तुम चलाना चाहो तो नाव की व्यवस्था भी है।''

''ना बाबा ना, मुझे नाव में डर लगता है। चलो थोड़ी देर बाग में बैठते हैं।''

आज तो थक गए। कल हम पुष्कर चलेंगे। गुरमीत ने प्रस्ताव रखा और फिर दोनों घर लौट पड़े लेकिन रास्ते में दाहिर सेन स्मारक देखना नहीं भूले।

सुबह पहली ही बस से पुष्कर निकले। अरावली की घाटियों में बस भागी जा रही थी। आधे घंटे में बस रुकी तो मंदिर दिखाई देने लगे।

लो आ गया पुष्कर। इधर देखो यह पुष्कर सरोवर। इसके चारों ओर घाट–ही–घाट दिखाई दे रहे हैं। यहीं नहा लेते हैं। जानते हो न, यह तीर्थराज कहलाता है। यहाँ स्नान का अपना महत्व है।

पुष्कर सरोवर

लो अब पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर देखते हैं। यह दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसके दायीं ओर पहाड़ी पर जो मंदिर दिखाई दे रहा है, वह गायत्री देवी का है और बायीं पहाड़ी पर सावित्री देवी का।''

ब्रह्मा मंदिर

''यह मेला प्रांगण है। यहाँ कार्तिक मास में एकादशी से पूर्णिमा तक भारी मेला भरता है। खूब पशु खरीदे और बेचे जाते हैं। दुनियाभर से लोग आते हैं।

''लो अब पंचकुण्ड चलते हैं। वहाँ पाँच कुण्ड हैं, कहते हैं उनको पाँडवों ने बनाया था। उसके ऊपर ही गोमुख है जिससे गिरने वाला पानी एक से दूसरे कुण्ड को भरता चलता है।

वाह! पानी फालतू नहीं जाता। कुण्डों को ही भरा हुआ रखता है।

'खाना वहीं खाएँगे, मगर कोई बंदर झपट कर न ले जाए, ध्यान रखना, वहाँ खूब बंदर रहते हैं।''

अभ्यास कार्य

शब्दार्थ

मज़ार	–	पीर की कब्र
बारहदरी	–	बरामदा
रमजान	–	मुस्लिम कलेण्डर के एक माह का नाम
व्यवस्था	–	तैयारी / प्रबंध
सदर	–	मुख्य
मण	–	चालीस किलो
ज़रदा	–	चावल का व्यंजन
गुंबद	–	शिखर,
देग	–	बड़ा बरतन

उच्चारण के लिए

व्यवस्थाएँ, कार्तिक, ब्रह्मा, प्रसिद्ध, गुंबद, तीर्थराज, गायत्री, प्रांगण

सोचें और बताएँ

1. गुरमीत और रज्जाक कहाँ घूमने गए?
2. पुष्कर में किसका मंदिर है?
3. तीर्थराज किसे कहा गया है?

लिखें

नीचे लिखे वाक्यों के आगे सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाएँ–

1. रमज़ान के महीने में कम से कम एक लाख यात्री अजमेर आते हैं। ( )
2. रज्ज़ाक मदार में रहता है। ( )
3. गुरमीत रेल से अजमेर गया। ( )
4. अजमेर की यात्रा गुरमीत ने अकेले की। ( )
5. उर्स के समय देग में बने चावल बाँटने को 'देग लूटना' कहते हैं। ( )

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. रमज़ान के दिनों में रज्जाक के मोहल्ले का प्रत्येक घर किसकी सुगंध से भर उठता है?
2. पुष्कर में दायीं ओर पहाड़ी पर किसका मंदिर है?
3. पंचकुण्डों की क्या विशेषताएँ हैं?
4. नीचे लिखे वाक्य किसने किससे कहे –

कथन	किसने	किससे
कितनी भीड़ रहती है इस गाड़ी में!		
जो भी अजमेर आता है इसे जरूर देखता है।		
बहुत सुंदर! इस तालाब में पानी भी काफी है।		

भाषा की बात

- सड़कों और बाजारों में जहाँ देखो भीड़–ही–भीड़ हो जाती है। रेखांकित शब्द एक से अधिक सड़कों और बाजारों के बारे में बता रहे हैं। इसी तरह एक से अधिक का अर्थ बताने वाले शब्दों को बहुवचन कहते हैं। आप भी नीचे तालिका में दिए गए शब्दों के बहुवचन बनाकर रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चों के खेलने और झूलने के बहुत से साधन हैं।
दिन	उन ..... बाजार जाकर सब्जी लाना भी कठिन काम है।
गुंबद	वह ..... वाला मकान है।
पांडव	कहते हैं इन कुण्डों को ..... ने बनाया था।
फूल	गुलाब के ..... की भीनी–भीनी महक फैल रही थी।

गुरमीत और रज्जाक सुबह पहली ही बस से पुष्कर निकले। अरावली की घाटियों में बस भागी जा रही थी। पुष्कर पहुँचकर मुझे बहुत खुशी हुई। बस रुकी तो मंदिर दिखाई देने लगे। मंदिरों की सुन्दरता को देखकर मेरा मन गदगद हो गया।

ऊपर दिए गए गद्यांश में रेखांकित शब्दों को पढ़िए और समझिए। ये सभी शब्द किसी स्थान, वस्तु या भाव की जानकारी करवा रहे हैं। जो शब्द किसी प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव का बोध कराते हैं ; उन्हें संज्ञा कहते हैं। 'गुरमीत', 'रज्जाक', 'अजमेर', 'पुष्कर' व 'अरावली' किसी व्यक्ति व स्थान के नाम हैं, अतः व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं और 'बस', 'घाटियों' व 'मंदिर' जातिवाचक संज्ञा हैं। इसी प्रकार 'खुशी', 'सुंदरता', 'गदगद' मन के भाव हैं, अतः इन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

आप भी पाठ में आए ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए–

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक	भाववाचक
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

यह भी करें

अजमेर के दर्शनीय स्थलों के नाम लिखिए	पुष्कर के दर्शनीय स्थलों के नाम लिखिए

हँसिए

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा – क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?

दूसरे बच्चे ने कहा – हाँ, अगर वह हिन्दी भाषा तथा अंग्रेजी में लिखी हो तो।

7 आजादी के दीवाने

बिगुल बज गया आजादी का,
हर मजदूर किसान जगा।
धरती जागी, अम्बर जागा,
सारा हिन्दुस्तान जगा।

धरती अपनी, शासन अपना,
एक यही बस नारा था।
पराधीनता के हर दुख से,
पाना तब छुटकारा था।

बापू ने जो अलख जगाई,
गूँज उठी वह घर–घर में।
भारतमाता की जय गूँजी,
वीर जवाहर के स्वर में।

राजस्थान नहीं था पीछे,
कुरबानी की घड़ियों में।
देश–प्रेम कसमसा रहा था,
फौलादी हथकड़ियों में।

वीर विजयसिंह, अर्जुन सेठी,
बन्धु बारहठ से सेनानी।
गुरु गोविन्द, तेजावत, वर्मा,
बिस्सा, गोपा और उसमानी।

आजादी के दीवानों के
नाम कहाँ तक तुम्हें गिनाएँ?
शीश दे दिए जिन लोगों ने
आज उन्हें हम शीश नवाएँ।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

पराधीनता	–	गुलामी
अम्बर	–	आसमान
कुरबानी	–	बलिदान
शीश	–	मस्तक
अलख	–	चेतना

सोचें और बताएँ

1. आजादी के दीवानों का नारा क्या था?
2. वीर जवाहर के स्वर में किसकी जय गूँजी?
3. कविता में कौनसे नारे की बात की गई है?

लिखें

सही विकल्प चुनकर कोष्ठक में लिखें–

1. राजस्थान पीछे नहीं था–
   (क) मजदूरी करने में (ख) कुर्बानी की घडियों में
   (ग) शासन करने में (घ) उपदेश देने में ( )
2. वीर जवाहर के स्वर में जय गूँजी थी–
   (क) इंग्लैण्ड की (ख) श्रीलंका की
   (ग) भारतमाता की (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. बिगुल बज गया ..... का, हर मजदूर ..... जगा।
2. देश–प्रेम ..... रहा था, फौलादी ..... में।
3. ..... दे दिए जिन लोगों ने, उन्हें हम शीश नवाएँ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. आजादी के दीवाने किस दुख से छुटकारा पाना चाहते थे?
2. राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखिए।

भाषा की बात

- अम्बर को आकाश, आसमान, नभ, गगन आदि नामों से भी जाना जाता है। समान अर्थ वाले ऐसे शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं। नीचे लिखे शब्दों के तीन–तीन पर्यायवाची लिखिए –

  धरती पेड़ हवा घर

- मिलाइए –

मोर	मुर्गी
शेरनी	चिड़ा
चूहा	कबूतरी
कबूतर	मोरनी
मुर्गा	बकरी
चिड़िया	शेर
बकरा	चुहिया

- शुद्ध शब्द पर (✓) व अशुद्ध शब्द पर (✗) का निशान लगाइए –

1. राजस्थान	( )	2. छुटकारा	( )
3. मजदुर	( )	4. विर	( )
5. बापू	( )	6. धरति	( )

यह भी करें

- 'आजादी के दीवाने' कविता को बाल सभा में सुनाइए।
- अपनी पसंद का चित्र बनाइए और रंग भरिए–

8 साहसी बालिका

आज पंद्रह अगस्त है। स्कूल में उत्सव मनाया जा रहा है। खूब भीड़–भाड़ है। कोई आजादी की कविता सुना रहा है, कोई गीत। अध्यापक जी ने भी एक अच्छी कहानी सुनाई।

बच्चो! एक छोटी लड़की थी। उसका नाम मैना था। उम्र थी सात साल। उसके पिता का नाम नाना फड़नवीस था। नाना साहब देश की आजादी चाहते थे। मैना भी आजादी चाहती थी। अंग्रेज इस बात पर उसके पिताजी से नाराज थे। उन्होंने नाना साहब के महल में आग लगवा दी। नाना साहब जलते हुए महल में से निकल गए। मैना भी किसी तरह जलते हुए महल से बाहर आ गई।

बाहर आते ही उसे अंग्रेज सैनिकों ने पकड़ लिया।

वे उसे जनरल के पास ले गए।

जनरल ने मैना से पूछा– ''लड़की तुम्हारा नाम क्या है?''

''मैना।''

''किसकी लड़की हो तुम?''

''नाना साहब की।''

अच्छा, तो तुम हमारे दुश्मन की लड़की हो। तुम्हारे पिताजी देश की आजादी चाहते हैं, क्या तुम भी यही चाहती हो ?''

''क्यों नहीं चाहती ?'' अपने देश की आजादी किसे प्यारी नहीं होती ?

''तो तुम भी अपने देश की आजादी के लिए लड़ोगी ?''

''जरूर लड़ूँगी।'' मैना निडर होकर बोली।

मैंना का उत्तर सुनकर जनरल क्रोध से बोला–''इस लड़की को आग में झोंक दो।''

जनरल का आदेश सुनकर अफसर ने मैना से बोला–''लड़की क्षमा माँग लो, कह दो कि तुम्हें आजादी नहीं चाहिए।''

''मैं क्षमा नहीं माँगूँगी। मुझे अपना देश प्यारा है। मुझे इसकी आजादी प्यारी है। मैं देश की आजादी के लिए लड़ूँगी। जरूर लड़ूँगी।''

मैना के उत्तर से जनरल और भी चिढ़ गया। उसने आदेश दिया–''अब देर मत करो, फौरन इसे आग में झोंक दो।''

बच्चो! सैनिकों ने मैना को पकड़कर आग में झोंक दिया। मैना ने हँसते–हँसते प्राण दे दिए लेकिन वह हम सभी को एक पाठ पढ़ा गई।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

आजादी	–	स्वतंत्रता
जनरल	–	सेना का अफसर
आदेश	–	आज्ञा
दुश्मन	–	शत्रु
निडर	–	जो डरे नहीं

उच्चारण के लिए

स्कूल, अंग्रेज, अध्यापक, क्षमा, फौरन

सोचें और बताएँ

(1) साहसी बालिका का क्या नाम था?

(2) नाना फड़नवीस क्या चाहते थे?

(3) जनरल ने बालिका को दण्ड क्यों दिया?

लिखें

सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए–

1. विद्यालय में उत्सव मनाया जा रहा था–

   (क) जन्माष्टमी का (ख) शिक्षक दिवस का

   (ग) गणतन्त्र दिवस का (घ) स्वतन्त्रता दिवस का ( )

2. मैना की उम्र थी–

   (क) 10 वर्ष (ख) 5 वर्ष

   (ग) 7 वर्ष (घ) 12 वर्ष ( )

निम्नलिखित शब्दों से रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

(आग, आजादी, झोंक, जनरल, फड़नवीस)

1. सैनिकों ने मैना को पकड़ कर.....में .....दिया।
2. मुझे अपनी .....प्यारी है।
3. उसके पिता का नाम नाना .....था।
4. उसे ..... के पास ले गए।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. अंग्रेज मैना के पिताजी से क्यों नाराज थे ?
2. मैना ने जनरल को क्या जवाब दिया?
3. ''तो तुम भी अपने देश की आज़ादी के लिए लड़ोगी।'' यह वाक्य किसने किस से कहा?

भाषा की बात

- पाठ में से ऐसे शब्दों को छाँटिए, जिनमें अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ) का प्रयोग हुआ हो।

पंद्रह	लड़ूँगी
.....	.....
.....	.....
.....	.....

- दिए गए शब्दों को वर्णमाला क्रम के अनुसार लिखिए–

  महल, नाराज़, साहसी, जलना, डर, लड़की

- निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग बनाइए–

घोड़ा	–	घोड़ी	मोर	–	.....
लड़का	–	.....	शेर	–	.....
बेटा	–	.....	राजा	–	.....

यह भी करें

- यदि आप मैना की जगह होते तो ''आग में –झोंकने की बात'' सुनकर क्या करते? लिखिए।

- दिए गए चित्र को देखकर अपने विचार लिखिए।

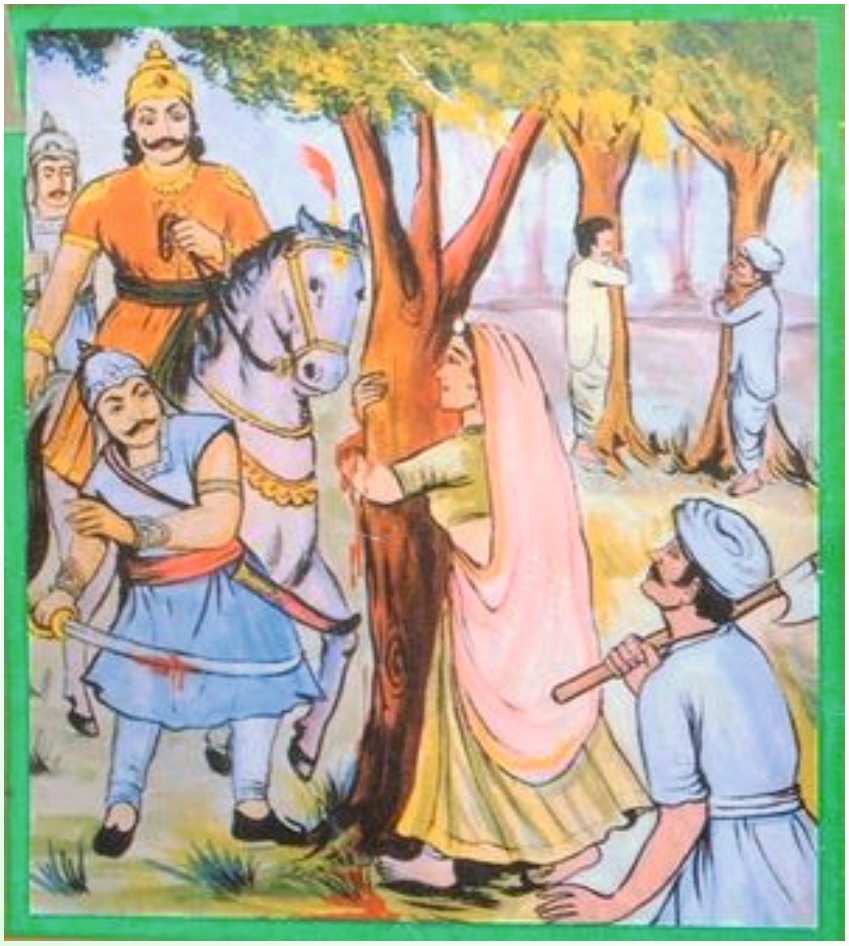

पढ़ने के लिए–

चित्रों के आधार पर वर्ग-पहेली

1 चू	2 हा		3	
	थी		द	4
		5		
	6			
7			8	

ऊपर से नीचे के क्रम में

2
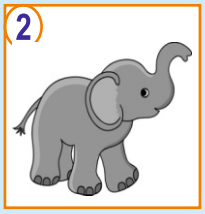

3

4

6
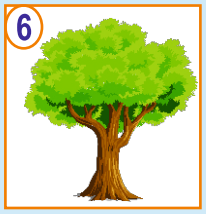

दाएँ से बाएँ के क्रम में

1
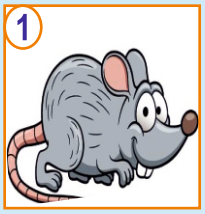

5

7

8

हँसिए

चिंटू – 'मित्र टिंकू, कल मैं सोते वक्त स्केल लेकर सोया।'
टिंकू – 'तुम स्केल लेकर क्यों सोये।
चिंटू – 'मैं देखना चाहता हूँ कि मैं कितना लम्बा सोता हूँ।'

9 कागा, मूषक टोपी ले ली

एक चूहा था। एक दिन उसको कहीं से एक मोती मिल गया। वह उसे लेकर सबके पास जाता और कहता –

''मूषक मोती–राजा!
ढोल बजाता आजा !!'

सब चूहे, गिलहरी, गौरैया, कबूतर, लोमड़ी, खरगोश उस चूहे के पास मोती देखते और उसकी तारीफ करते। एक दिन चूहा दरजी के पास गया और बोला –

''दरजी मेरी टोपी सी दे।
उसमें बढ़िया मोती जड़ दे।

दरजी ने टोपी सी दी और उस पर मोती जड़ दिया। अब तो चूहे को मजा ही आ गया!

''टोपी झालरदार, उस पर मोती आबदार!''

ऐसा गाता हुआ वह उसे पहन लेता और अकड़–अकड़कर चलता –

''मूषक मोती–राजा !
ढोल बजाता आजा !!''

सब जानवर चूहे की तारीफ करते। मगर कौए को उससे चिढ़ थी। एक दिन क्या हुआ कि चूहा तो टोपी सिर पर रखे अकड़ता हुआ जा रहा था। उधर से कौए ने झपट्टा मारा और टोपी लेकर नीम की डाली पर बैठ गया। चूह को बहुत गुस्सा आया। वह बोला–

''कागा–कागा, टोपी दे !
टोपीवाला मोती दे !!''

कौए ने मना कर दिया, तो चूहे ने नीम से कहा –

''नीम–नीम काग उड़ा!''

नीम ने कहा, 'मैं क्यों उड़ाऊँ?''

चूहे ने कहा, ''नहीं उड़ाए तो बढ़ई से कटाऊँ। ''

चूहा बढ़ई के पास गया और बोला –

''कागा, मूषक टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

नीम काग उड़ावे नी।
कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।''

''तो मैं क्या करूँ?''
''तू नीम काट।''
''मैं नीम क्यों काटूँ?''

''नहीं काटे तो राजा से पिटवाऊँ !''

चूहा राजा के पास गया और बोला –

''राजा–राजा, बढ़ई दंड।
कागा मूषक–टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

बढ़ई नीम काटे नी।
नीम काग उड़ावे नी।

कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।''

राजा ने कहा– ''भाग, भाग, आया बड़ा टोपीवाला।''

चूहा बोला– ''टोपीवाला नहीं।

मूषक मोती– राजा !
रानी रूठे राजा !!''

वहाँ से चूहा रानी के पास गया और बोला –

''रानी–रानी, राजा रूठ!

कागा मूषक–टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

बढ़ई नीम काटे नी।
नीम काग उड़ावे नी।

कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।

रानी बहुत हँसी। उसकी सखियों ने चूहे को बहुत खिजाया। तब कहा –

''रानी सा तो रूठें ना !
मूषक राजा तूठें ना !!

''रानी ना रूठें तो साँप से कटाऊँ।'' कहकर चूहा साँप के पास गया।

साँप–साँप रानी को काट।''

''क्यों?''

''कागा मूषक–टोपी ले ली।
बैठा नीम की डाली।

रानी राजा रूठे नी।
राजा बढ़ई दंडे नी।

बढ़ई नीम काटे नी।
नीम काग उड़ावे नी।

कागा टोपी देवे नी।
टोपी बिना चाले नी।''

''मैं तो रानी को नहीं काटूँ।''
''नहीं काटे तो चींटी चढ़ाऊँ

चूहा चींटी के पास गया और बोला –

''चींटी रानी।
बड़ी सयानी।

एक काम तू मेरा कर दे।
तुझे साँप का भोज करा दूँ

चींटी ने कहा –

''अपनी फौज लाती हूँ।
तेरे साथ जाती हूँ।''

चींटी हजारों की फौज लेकर चूहे के साथ चली। चींटियों की फौज देखते ही साँप घबराकर बोला –

'' मूषक राजा मुझे न मार !
रानी को डसने को मैं तैयार !!''

साँप मूषक राजा के साथ महलों की ओर चल दिया। रानी ने मूषक के साथ साँप को आते देखा तो हाथ जोड़कर बोली –

''साँप देवता मुझे न काट !
अभी रूठती हूँ, मैं पाट !!''

रानी कोप–भवन में जाने की तैयारी करने लगी।

उधर चूहा राजा के पास गया –

''राजा रानी रूठी !
राजा की बात झूठी !!''

राजा ने जाकर देखा तो रानी रूठ रही थी। वह बोला –

''रानी कोप–भवन मत जाओ !
बढ़ई को पिटवाता, आओ !!''

राजा ने बढ़ई को पीटने के लिए सिपाही भेजे। मूषक राजा के साथ सिपाही आते देखा तो वह डर गया और बोला –

'' मूषक मुझे न तुम पिटवाओ !
अभी नीम काटूँ मैं, आओ !!''

बढ़ई आरा, वसूला और कुल्हाड़ी लेकर मूषक के साथ चला। उनको आते देखकर नीम घबराया और बोला –

''बढ़ई देव विनय करता हूँ !
अभी काक में भय भरता हूँ !!''

ऐसा कहकर नीम ने अपनी डाली को जोरों से हिलाया। कौआ डर के मारे काँव–काँव करने लगा और उसकी चोंच से टोपी गिर गई।

मूषक राजा ने टोपी ले ली। सिर पर धारण की और नाचने लगा –

" मेरी टोपी झालरदार !
उस पर मोती आबदार !!

कागा नीम चढ़े सरदार !
मूषक राजा के दरबार !!"

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

मूषक	–	चूहा	बढ़ई	–	खाती, लकड़ी का कारीगर
आबदार	–	चमकदार	फौज	–	सेना
तारीफ	–	प्रशंसा	कोप	–	क्रोध, रोष

सोचें और बताएँ

1. टोपी पर मोती किसने जड़ा?
2. मूषक राजा से कौन चिढ़ता था?
3. साँप क्यों घबरा गया था?

लिखें

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. दरजी ने टोपी सी दी और उस पर ..... जड़ दिया।
2. टोपी लेकर कौआ ..... पर बैठ गया।
3. कौआ डर के मारे ..... करने लगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. चूहा दरजी के पास क्यों गया था?
2. अन्त में चूहे की सहायता किसने की?
3. मूषक के साथ सिपाही को आता देख बढ़ई ने क्या कहा?
4. लिखिए – कौन, किससे डरा –

साँप	रानी .....
राजा	बढ़ई .....
नीम	कागा .....

भाषा की बात

- पढ़िए, समझिए और लिखिए–

एक	अनेक	अनेक
एक चूहा था	कई चूहे थे।	चूहों के बिल थे।
कौआ	कौए	कौओं के घोंसले .....।
बच्चा	.....	..... के कपड़े
बाजा	.....	..... की धुन
मोजा	.....	..... की जोड़ी
समोसा	.....	..... का ढेर
कटोरा	.....	..... में खीर

- दरजी ने टोपी सी दी और उस पर मोती जड़ दिया। वाक्य में रेखांकित शब्द'टोपी' स्त्रीलिंग व 'मोती' पुल्लिंग शब्द हैं। शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो उसे 'लिंग' कहते हैं।' पाठ में से आप भी लिंग को व्यक्त करने वाले चार–चार शब्द लिखिए–

  पुल्लिंग .....

  स्त्रीलिंग.....

- झालरदार शब्द 'झालर' और 'दार' शब्दों से मिलकर बना है। आप भी 'दार' शब्द जोड़कर नए शब्द बनाइए –

काम	फौज	हवा	फल	शान
.....	.....	.....	.....	.....

- निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम में लिखिए–

कागा	मूषक	खाती	आरा	बढ़ई	झालरदार
फौज	गाय	मोती	ईश्वर	चूहा	साँप

यह भी करें

1. इस कहानी को बालसभा में सुनाइए।
2. सभी लोग अलग–अलग तरह के काम करते हैं। अलग–अलग कामों को करने वालों को अलग–अलग नामों से जाना जाता हैं; जैसे– लकड़ी का काम करने वाला बढ़ई। ऐसे नीचे दिए कामों को करने वालों को क्या कहेंगे? लिखिए –

काम	नाम
जो मटकी बनाता है।	
जो बाल काटता है।	
जो बीमारी का इलाज करता है।	
जो लोहे का काम करता है।	
जो विद्यालय में पढ़ाते हैं।	
जो कपड़ों की सिलाई करता है।	